CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिं 930

३४
हिं
930

संस्कृत साहित्य सौरभ

सौन्दरनन्द

१६३३६

हिं
930

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balm

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, B

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

२८

अश्वघोष-कृत

सौन्दरनन्द

●

1423

श्री वासुदेवशरण अग्रवाल

द्वारा

कथा-सार

●

हि. १५०

विष्णु प्रभाकर

द्वारा

संपादित

●

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९६०

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मन्त्री, सस्ता साहित्य मण्डल,
नई दिल्ली

दूसरी बार : १९६०
मूल्य
चालीस नये पैसे

मुद्रक
हीरा मार्ट प्रेस
दिल्ली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हि. 930

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

हमारा संस्कृत-साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। भारतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा अंग हो, जिसके सम्बन्ध में मूल्यवान् सामग्री का अनन्त भंडार संस्कृत-साहित्य में उपलब्ध न हो। लेकिन खेद की बात है कि संस्कृत से अपरिचित होने के कारण हिन्दी के अधिकांश पाठक उससे अनभिज्ञ हैं। उनमें जिज्ञासा है कि वे उस साहित्य से परिचय प्राप्त करें; परन्तु उसका रस वे हिन्दी के द्वारा लेना चाहते हैं।

पाठकों की इसी जिज्ञासा को देखकर संस्कृत के महाकवियों, नाटककारों आदि की प्रमुख रचनाओं को छोटी-छोटी कथाओं के रूप में हम हिन्दी में प्रस्तुत कर रहे हैं।

पुस्तकों की भाषा बहुत सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए टाइप भी मोटा लगाया गया है।

इन पुस्तकों का सम्पादन हिन्दी के सुलेखक श्री विष्णु प्रभाकर ने बड़े परिश्रम से किया है।

इस माला में कई पुस्तकें निकल चुकी हैं और आगे निकल रही हैं। आशा है, हिन्दीके पाठकों को इन पुस्तकों से संस्कृत-साहित्य की महान् रचनाओं की कुछ-न-कुछ झांकी अवश्य मिल जायगी। पूरा रसास्वादन तो मूल ग्रन्थ पढ़कर ही हो सकेगा। यदि इन पुस्तकों के अध्ययन से मूल पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा हुई तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

दूसरा संस्करण

इस माला की पुस्तकें बहुत ही लोकप्रिय हो रही हैं और हमें हर्ष है कि कुछ पुस्तकों का चंद महीनों में दूसरा-तीसरा संस्करण प्रकाशित हो रहा है। आशा है, भारतीय संस्कृति और साहित्य के प्रेमी पाठक इन पुस्तकों को और भी चाव से अपनावेंगे।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूमिका

महाकवि अश्वघोष प्रथम शती ईस्वी में हुए। वह सम्राट् कनिष्क के समकालीन कहे जाते हैं। वह साकेत के रहनेवाले थे। उनका जन्म ब्राह्मण-कुल में हुआ था और उन्होंने अनेक दार्शनिक और काव्यग्रंथों का गम्भीर अध्ययन किया था। अनन्तर वह बौद्ध-धर्म की ओर आकृष्ट हुए और संघ में दीक्षित होकर भिक्षु बन गये। उन्होंने 'बुद्धचरित' और 'सौन्दरनन्द' नामक दो महाकाव्यों की रचना की। इसके अतिरिक्त कुछ नाटक भी लिखे थे, जिनमें से 'शारद्वतीपुत्र प्रकरणम्' नामक नाटक की एक खण्डित प्रति मध्य-एशिया से मिली थी। मूल 'बुद्धचरित' के अट्ठाइस सर्गों में से केवल चौदह ही मिले हैं। शेष का चीनी और तिब्बती में अनुवाद प्राप्त हुआ है। सौभाग्य से 'सौन्दरनन्द' सम्पूर्ण मिला है। 'सौन्दरनन्द' की दो प्राचीन हस्तलिखित प्रतियां नेपाल-महाराज के दरबार पुस्तकालय में सुरक्षित हैं।

'सौन्दरनन्द' काव्य में १८ सर्ग हैं। इसमें बुद्ध के भाई नन्द और उसकी पत्नी सुन्दरी की कथा है। नन्द अपनी पत्नी से बहुत अधिक प्रेम करता था। किन्तु बुद्ध ने उसके आध्यात्मिक कल्याण की इच्छा से उसे भिक्षु-धर्म में दीक्षित कर लिया। उसीकी कथा इस काव्य में है। काव्य की दृष्टि से तो यह ग्रंथ अत्यन्त उत्कृष्ट है ही, इसमें कवि ने बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांत और साधना-पथ का जैसा विशद और सरस वर्णन किया है वैसा अन्यत्र प्राप्त नहीं होता। संस्कृत-भाषा और साहित्य के विकास की दृष्टि से भी इस काव्य का विशेष महत्त्व है। शुष्क दार्शनिक सिद्धांतों को सरस बनाकर किस प्रकार लोक-धरातल पर लाया जा सकता है, 'सौन्दरनन्द' काव्य इसका अच्छा उदाहरण है।

—सम्पादक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हि. ९३०

सौन्दरनन्द

: १ :

कपिल गौतम एक बहुत ही बड़े धार्मिक मुनि हुए हैं। तप करने के लिए उन्होंने हिमालय के अंचल में अपना आश्रम बनाया था। उस तपोवन में यज्ञ की अग्नि से उठा हुआ धुआं बादल के समान छाया रहता था। वहां के सरोवर सूर्य की धूप में हँसते हुए कमलों से भरे हुए थे और वह वन अनेक सुन्दर लताओं और वृक्षों से परिपूर्ण था। तपस्वी लोग जंगली चावल और फल खाकर सन्तुष्ट रहते थे और मन लगाकर तपस्या करते थे।

ऐसे सुन्दर स्थान में रहने के लिए इक्ष्वाकु वंश के कुछ राजकुमार वहां आये। उन राजकुमारों में जो सबसे छोटा था, उसकी माता ने विवाह-शुल्क के रूप में अपने पुत्र के लिए राज्य प्राप्त कर लिया था। इसी कारण सब बड़े भाई वन में चले आये थे। कपिल मुनि ने इनका स्वागत किया और उनके उपाध्याय बने। उनके गोत्र के अनुसार ही राजकुमारों का गोत्र भी गौतम कहलाया। आश्रम के जिस भाग में वे रहते थे वह शाक (साखू) के पेड़ों से भरा हुआ था। इसलिए वे राजकुमार लोक में शाक्य के नाम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मे प्रसिद्ध हुए। एक दिन उनके अभ्युदय की इच्छा से मुनि ने हाथ में जल का कलश लेकर उनसे कहा, "इस कलश से जो धारा धरती पर गिरे उसके पीछे-पीछे तुम लोग आओ।" राजकुमारों ने रथों पर चढ़कर गुरु का अनुसरण किया। मुनि ने आश्रम की भूमि के चारों ओर आकाश-मार्ग से इस जलधारा का सिंचन किया और राजपुत्रों से कहा, "जल की धारा से घिरी हुई इस भूमि पर तुम लोग मेरे मरने के बाद एक नगर का निर्माण करना।"

मुनि के स्वर्गवासी होने के बाद राजकुमारों ने ऐसा ही किया। जो नगर वहां बसाया गया उसका नाम कपिल ऋषि के नाम पर कपिलवस्तु पड़ा। आयु और गुणों में जो उनमें सबसे बड़ा था, उसको उन्होंने विधिपूर्वक अपना राजा चुना। आगे चलकर इसी वंश में शुद्धोदन नाम का एक राजा हुआ। वह बहुत ही धर्मात्मा था और उसका यश चारों ओर फैला हुआ था। उसी समय स्वर्ग के देवता यह देखने के लिए पृथ्वी पर उतरे कि धर्म का आचरण कहांपर अधिक होता है। उसके राज्य की अवस्था देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए। उनके साथ बोधिसत्व भी थे। उन्होंने राजा के कुल में जन्म लेने का निश्चय किया। राजा के माया नाम की एक रानी थी, जो स्वर्ग की देवी के समान शुद्ध और तेजस्विनी थी। उस रानी ने स्वप्न में छः दांतों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाले एक सफेद हाथी को देखा। इसका फल बताते हुए ज्योतिषियों ने कहा, "रानी की कोख से एक ऐसा राजकुमार जन्म लेगा, जो धन, धर्म और यश से सम्पन्न होगा।"

समय आने पर यह बात ठीक निकली। उस राजकुमार का नाम सर्वार्थसिद्ध रखा गया। राजा की छोटी रानी ने भी एक पुत्र को जन्म दिया, जो नन्द नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह बहुत ही सुन्दर था। इस कारण लोग उसे सुन्दर कहते थे। राजा ने दोनों राजकुमारों को बड़े चाव से पाला-पोसा। धीरे-धीरे दोनों बड़े हुए। दोनों ने सब विद्याएं प्राप्त कीं। नन्द का मन विषयों में अधिक लगा रहता था, लेकिन सर्वार्थसिद्ध या सिद्धार्थ को विषय अपनी ओर नहीं खींच पाते थे। बूढ़े, रोगी और मरे हुए व्यक्ति को देखकर उसे संसार से ही अरुचि हो गई। जन्म-मरण के भय को मिटा डालने के लिए उसने मोक्ष-मार्ग में अपना मन लगाया। एक दिन रात के समय सोते हुए अपनी स्त्री को छोड़कर वह वन में चला गया।

वन में उसने कठोर तपस्या करनेवाले मुनियों को देखा। लेकिन उनके मन में विषय-तृष्णा अभी बनी हुई थी। वह वहां से आगे बढ़ गया। मोक्षवादी अराड और शान्तिवादी आचार्य उद्रक के पास भी उसे सच्चे मार्ग का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पता न लगा। तब उसने स्वयं ही कठोर तप करना शुरू किया, पर यहां भी उसे सत्य के दर्शन नहीं हुए। उसने तपस्या छोड़ दी और जीवित रहने के लिए आहार ग्रहण किया। वह एक पीपल के पेड़ के नीचे दृढ़ आसन लगाकर बैठ गया। वहां उसने मार की सेना पर विजय प्राप्त की और अविनाशी अमृत पद का ज्ञान पाया।

वहां से बुद्ध वाराणसी नगर में आये और उन्होंने धर्म के चक्र का प्रवर्तन किया। उन्होंने सत्य के चार विभाग करके अपने धर्म की व्याख्या की और कौंडिन्य को अपना पहला शिष्य बनाया। फिर वह काशी गये। वहां से राजगृह होते हुए वह कपिलवस्तु भी आये। उन्होंने अपने पिता को धर्म का उपदेश दिया। और भी अनेक शाक्य-पुत्रों ने उनके धर्म का उपदेश सुना और जन्म-मरण के दुःख से छूटने के लिए वे सब बुद्ध-धर्म में दीक्षित हो गये।

: २ :

यद्यपि बुद्ध कपिलवस्तु में रहकर धर्म का उपदेश कर रहे थे और दूसरे शाक्य-पुत्र उसमें रुचि ले रहे थे, फिर भी नन्द महल में रहकर अपनी पत्नी के साथ विहार कर रहा था। उसकी पत्नी अपने रूप के कारण सुन्दरी, हठ और गर्व के कारण मानिनी तथा क्रोधी होने के कारण भामिनी कहलाती थी। एक बार नन्द प्रेम में मग्न होकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपनी पत्नी का शृङ्गार करने में लगा हुआ था। उसी समय तथागत बुद्ध ने भिक्षा के लिए उसके घर में प्रवेश किया, पर किसीने भी उनकी ओर ध्यान नहीं दिया। बुद्ध भाई के घर से भिक्षा पाये बिना ही लौट गये। लौटते समय एक स्त्री ने उनको देखा और अपने स्वामी की प्रतिष्ठा का विचार करके उसने तुरन्त नन्द को इस बात की सूचना दी। उसने कहा, "भगवान अनुग्रह करके हमारे घर पधारे थे, पर भिक्षा पाये बिना ही यहां से लौटे जा रहे हैं।"

यह सुनकर नन्द कांपने लगा। हाथ जोड़कर उसने अपनी पत्नी से प्रार्थना की, "गुरु को प्रणाम करने के लिए मैं अवश्य जाऊंगा।" उसकी स्त्री ने बहुत ही विह्वल होकर कहा, "गुरु के दर्शन करने के लिए आप जाना चाहते हैं। मैं आपके धर्म में बाधा नहीं डालूंगी। लेकिन जबतक मेरे शरीर का यह गीला आलेपन सूखे, इससे पहले ही आप लौट आवें।"

इस प्रकार पत्नी से विदा लेकर नन्द बुद्ध के पास चला, लेकिन पत्नी का प्रेम उसे अब भी पीछे ही खींच रहा था। गुरु दूर न चले जायं, ऐसा सोचकर वह लम्बे पग रखता हुआ आगे बढ़ा। और तब उसने मार्ग में ठहर-ठहर-कर जाते हुए बुद्ध को देखा। राजमार्ग पर जनता की भीड़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को चीरते हुए वह आगे बढ़ रहे थे। एक एकान्त स्थान पर नन्द ने उन्हें प्रणाम किया और गद्‌गद् स्वर में कहा, "जब मैं अपने महल में ऊपर बैठा था तब मैंने सुना कि भगवान मेरे ऊपर कृपाकर वहां पधारे। सुनते ही में शीघ्र आपके पास आया हूं। हे भिक्षुश्रेष्ठ, आपका भिक्षा-काल आज मेरे घर पर ही बीते।"

उसके ऐसे स्नेह से भरे वचन सुनकर सुगत ने ऐसा संकेत किया, जिससे उसने समझा कि उन्हें भोजन नहीं करना है। तब उसने प्रणाम करके घर लौट जाने का विचार किया। ठीक उसी क्षण बुद्ध ने अपना भिक्षा-पात्र उसके सामने बढ़ा दिया। नन्द ने संयत भय से उसे अपने हाथों में ले लिया, लेकिन उसका मन अब भी अपनी पत्नी में लगा हुआ था। वह पीछे की ओर हटने लगा। पर तथागत ने तभी अपनी शक्ति से उस गली का पिछला मार्ग बंद कर दिया। लाचार होकर वह धीरे-धीरे बुद्ध के पीछे चलने लगा और विहार में पहुंच गया। वहांपर उसे दुखी देख-कर बुद्ध ने उसके सिर पर हाथ रखा और उसे समझाना शुरू किया। उन्होंने कहा, "इस संसार में भोग भोगने से कभी तृप्ति नहीं होती। बुढ़ापा, रोग और मौत के समान कोई भय नहीं है। राग की अग्नि सबसे अधिक जलाती है। इसलिए तुम प्रज्ञा-रूपी कवच पहन लो। जब योगी को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तत्व का ज्ञान हो जाता है तो मृत्यु के सामने भी वह दुखी नहीं होता।" बुद्ध की बात सुनकर नन्द ने हृदय में दुःख रहते हुए भी कहा, "अच्छा।" तब तुरन्त ही बुद्ध ने उसका उद्धार करने की इच्छा से आनन्द को आदेश दिया, "आनन्द, शान्ति प्राप्त कराने के लिए नन्द को प्रव्रजित करो।"

नन्द का मन भीतर से रो रहा था। उसने ऐसा करने से मना कर दिया। तब बुद्ध ने कुछ कठोर भाषा में कहा, "तुम्हारा बड़ा भाई हूं। मैंने प्रव्रज्या ले ली। और भी भाइयों ने ऐसा ही किया है। लेकिन तुम्हारे मन में ज्ञान का उदय नहीं होता। प्रमाद करनेवाले व्यक्ति के लिए शोक है। मैं तुम्हें मंगलमय पवित्र मार्ग में ले रहा हूं। जिस प्रकार बालक के मिट्टी खा लेने पर उसकी धाय मुख में जबर्दस्ती उंगली डालकर उसको निकाल लेती है, वैसे ही तुम्हारे चित्त में गड़ी हुई गांठ को निकालने के लिए मैं कठोर वचन कह रहा हूं।"

बुद्ध के ऐसा कहने पर नन्द बेबस हो गया। उसने कहा, "जैसी आपकी आज्ञा है, मैं वैसा ही करूंगा।"

जैसे ही नन्द ने यह कहा, आनन्द तुरन्त उसे अलग ले गया। वह छटपटा रहा था, लेकिन उसका मुण्डन कर दिया गया। भिक्षु के काषाय वस्त्र पहनकर वह नये पकड़े

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गये हाथी के समान चिन्ता में डूब गया।

: ३ :

जब नन्द को बुद्ध इस प्रकार बलपूर्वक अपने साथ ले गये तब महल में सुन्दरी की दशा बहुत ही शोचनीय हो गई। वह बार-बार झरोखों में आकर देखने लगी। उसे शंका होने लगी कि उसके पति को किसीने रोक लिया है। देर तक खड़ी रहने से वह बहुत थक गई थी, इस कारण वह पलंग पर गिर पड़ी। अत्यन्त दुखी होकर वह तरह-तरह की चिन्ताएं करने लगी। स्वामी मुझसे कह गये थे कि तुम्हारा आलेपन सूखने से पहले ही मैं आ जाऊंगा, लेकिन वह आये क्यों नहीं ? क्या सचमुच उन्हें वैराग्य हो गया है ? या मेरे ही दोष से उनका मन कहीं और जा लगा है ?

इसी समय उसकी एक सखी ने उसे रोते हुए यह समाचार दिया कि तथागत ने उनके बहुत रोने पर भी नन्द को प्रव्रजित कर दिया।

यह समाचार सुनकर वह घायल हथिनी के समान विलाप करने लगी। उसने सब शृङ्गार उतार डाले, वस्त्र फाड़ दिये। अपने मुख को नोच लिया और धरती पर गिर पड़ी। उसकी यह अवस्था देखकर महल की दूसरी स्त्रियां बहुत दुखी हुईं। एक वृद्ध स्त्री ने उसे समझाने का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रयत्न किया, "तुम राजऋषि शुद्धोदन की पुत्र-वधू हो। तुम्हारे पति ने धर्म का मार्ग ग्रहण किया है। तुम्हें दुखी नहीं होना चाहिए। इक्ष्वाकु वंश के राजा तो ऐसा किया ही करते हैं।"

लेकिन सुन्दरी पर कोई असर नहीं हुआ। तब दूसरी स्त्री ने बड़े प्रेम से कहा, "मैं सच कहती हूं कि बहुत जल्दी ही तुम उन्हें देखोगी। वह तुम्हारे बिना नहीं रह सकते। तुम रोना बन्द करो। उन्होंने अपनी इच्छा से काषाय वस्त्र नहीं पहने हैं। इसलिए यदि वह उसे छोड़ देंगे तो इसमें कोई दोष नहीं होगा।"

इस सखी के ऐसे वचन सुनकर वह अपने आवास में चली गई, पर उसका मन अपने पति में ही लगा हुआ था।

: ४ :

नन्द ने अपने शरीर पर भिक्षु का वेष धारण कर लिया था, लेकिन उसका मन अभी तक पत्नी में डूबा हुआ था। विहार में रहते हुए भी उसे शान्ति नहीं मिली। धैर्य छोड़कर वह विलाप करने लगा, "अपनी रोती हुई पत्नी को छोड़कर भी जो तप कर सकता है, वह कठोर है। संसार में स्नेह का बन्धन तोड़ना कठिन है। न मुझ-में ज्ञान है, न मैं सबकुछ भूल सकता हूं। मैं तो एक ओर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काम और दूसरी ओर बुद्ध इन दो पाटों के बीच में पिसा जा रहा हूं। चलते समय आंखों में आंसू भरकर मेरी पत्नी ने कहा था, 'आलेपन सूखने से पहले ही आ जाना।' ये कोमल वचन मुझे आज भी नहीं भूलते। ये जो चट्टान पर आसन जमाये हुए भिक्षु ध्यान में बैठे हैं, क्या इनके मन में काम नहीं है? क्या कोयल और बसन्त इनके मन को नहीं खींचते? देवता और ऋषि सब लोग काम के बाण से घायल हुए हैं। फिर मैं तो साधारण मनुष्य हूं। मैं घर लौट जाऊंगा। जिसका मन चंचल है, वह सिद्ध कैसे बन सकता है? उसमें ज्योति कहां है? वह तो चित्र में लिखा हुआ दीपक है। ऐसे भी राजा हुए हैं जो तपोवन छोड़कर फिर घरों को लौट गये। तब मेरे लिए घर लौट जाना क्या बुरा होगा? जैसे ही मेरे गुरु यहां से भिक्षा के लिए निकलेंगे वैसे ही मैं घर चला जाऊंगा।"

इस प्रकार सोचते हुए नन्द घर जाने की चिन्ता में व्याकुल हो रहा था। तब एक भिक्षु ने उसकी ओर देखते हुए स्नेहपूर्वक कहा, "तुम्हारा इस प्रकार रोना यह बताता है कि तुम्हारे हृदय में संघर्ष है। धीरज धारण करो। शान्ति और आंसू एक साथ नहीं रहा करते। जिस प्रकार वैद्य शरीर की पीड़ा को दूर कर देता है ऐसे ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आध्यात्मिक गुरु या ज्ञानी मन के रोग को दूर कर देता है। हे मित्र, यदि मुझपर विश्वास करते हो तो अपने मन का हाल मुझसे कहो।"

इस प्रकार प्रेरणा पाकर नन्द उस भिक्षु को एकांत में ले गया और अपने मन की सब बातें उसे बताने लगा। भिक्षु ने मन में सोचा—आह, वह बेचारा उस हिरन के समान है, जो व्याध के महाभय से एक बार निकल आया है, लेकिन गाने के लोभ से फिर बन्धन में फंसना चाहता है। जंगल की आग से बचा हुआ पक्षी फिर जलने के लिए घोंसले में जाना चाहता है।

प्रकट में उसने कहा, "हे मित्र, तुम्हें अभी ज्ञान नहीं मिला है। तुम्हारे मन में शांति नहीं है। इसलिए तुम्हें धर्म में आनन्द नहीं जान पड़ता। लालची मनुष्य धन में और मूर्ख काम में सुख मानता है, पर सज्जन अपनी विद्या से भोगों को जीतकर शान्ति में मन लगाते हैं। तुम यशस्वी हो, बुद्धिमान हो, तुम्हें घर लौटने का विचार शोभा नहीं देता। क्या पर्वत कभी वायु के सामने झुकता है? जैसे नंगी तलवार को पकड़ना विपत्ति में पड़ना है, वैसे ही स्त्रियों का संसर्ग है। जलती हुई आग को, क्रोधी सांप को, पकड़ना आसान है, पर स्त्री का मन वश में नहीं होता। स्त्री का शरीर खाल से ढका हुआ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कंकाल है। यह सब जानते हुए भी तुम उसकी ओर क्यों खिंच रहे हो ? अपने चंचल मन को रोको। यह वेश धारण करके काम की इच्छा करना हास्यास्पद है। अपने शरीर को कच्चे बर्तन के समान क्षणभंगुर जानकर अपनी बुद्धि को मोक्ष में लगाओ। तुम्हें घर जाने की उत्कण्ठा नहीं करनी चाहिए।"

: ५ :

यद्यपि भिक्षु ने नन्द को इस प्रकार बहुत समझाया, पर उसको शान्ति नहीं मिली। भिक्षु ने फिर कहा, "यह शरीर रोगों का घर है। बुढ़ापा इसे घेर लेता है। नदी-किनारे के पेड़ के समान इसे सदा नाश का डर लगा रहता है। यह सब जानकर बल का अभिमान कैसा ? मिट्टी के कच्चे घड़े का सहारा लेकर जैसे कोई व्यक्ति तूफ़ानी समुद्र को पार करना चाहे, वैसे ही इस नाश-वान शरीर के बल पर विषयों को भोगने की इच्छा है। यह शरीर तो मिट्टी के कच्चे घड़े से भी गया-बीता है। रोगों का घर है। उसमें बल का क्या भरोसा। सांप मन्त्रों से शांत हो जाता है। परन्तु पृथ्वी, जल, वायु आदि शरीर की धातुओं को किसी भी मन्त्र से वश में नहीं किया जा सकता। यह जगत असार, अनिश्चित और अशुभ परिणाम-वाला है। इस जगत में बल भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अस्थिर है। सहस्र भुजाओंवाले कार्तवीर्य अर्जुन का बल परशुराम के सामने कहां चला गया ? कंस और असुरराज केसी का नाश करनेवाले कृष्ण का बल भी जरा नामक व्याध के सामने समाप्त हो गया था। यदि तुम अपने बल को उनसे बड़ा समझते हो तो इन्द्रियों के साथ लड़ाई करके देखो। यदि तुम्हारी जय हुई तो सचमुच तुम्हारा बल ठीक है, हार गये तो तुम्हारा अभिमान व्यर्थ है। जो इन्द्रियों को जीत लेता है वह सच्चा वीर होता है। 'मैं सुंदर हूं,' तुम्हारा यह समझना ठीक नहीं है। कभी फिरकर न आनेवाला तुम्हारा यौवन वेग से जा रहा है। गई ऋतु फिर लौट आती है, क्षीण हुआ चन्द्रमा फिर पूरा हो जाता है, लेकिन मनुष्य का यौवन जाकर फिर नहीं लौटता। जैसे रस निचोड़ने पर ईख जलाने के लिए फेंक दी जाती है, वैसे ही बुढ़ापा इस शरीर के रस को सोखकर उसे मौत को सौंप देता है। मैं, मेरा समझने का भाव, जब तुम छोड़ोगे तभी तुम्हें शान्ति मिलेगी। घास के समान दुःख बिना बुलाये आ जाता है, पर धान के समान सुख बड़ी मेहनत करने पर प्राप्त होता है, नहीं भी प्राप्त होता। विषय केवल अनर्थ के मूल हैं। शत्रु के समान उन्हें छोड़ देना चाहिए। शत्रु तो एक बार मित्र भी हो जाता है, पर विषय इस लोक में या परलोक में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कभी किसीके सगे नहीं होते। इसलिए शुद्ध मन से अपने हित को पहचानो और मेरे मत का पालन करो, वरना जो तुम्हारे मन में हो, उसे साफ-साफ कहो।"

महा विद्वान भिक्षु के उस उपदेश को सुनकर भी जब नन्द को शान्ति नहीं मिली, तब उस भिक्षु ने तथागत के पास जाकर सब बातें कहीं। कहा, "नन्द अपने व्रत को तोड़ना चाहता है। वह पत्नी से मिलने के लिए घर जाना चाहता है। उसके मन का धैर्य चला गया है।"

यह सुनकर बुद्ध ने नन्द को अपने पास बुलाया। उससे सब बातें पूछीं। फिर उसको स्त्री-रूपी अन्धकार में भटकता हुआ जानकर उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसके चित्त को शुद्ध करने की इच्छा से आकाश में उड़ गये और तुरन्त हिमालय पर जा पहुंचे। वहां एक लाल मुंह की कानी बंदरिया को देखकर बुद्ध ने नन्द से पूछा, "हे नन्द, इस बानरी और अपनी पत्नी में तुम किसे अधिक सुन्दर समझते हो ?"

नन्द ने हँसकर कहा, "कहां वह आपकी रूपवती वधू और कहा यह बानरी !"

तब बुद्ध नन्द को लेकर देवराज इन्द्र के नन्दन वन में पहुंचे। तत्काल अनेक सुन्दर अप्सराएं नन्द के चारों ओर आ गईं। उन्हें देखकर उसका शरीर राग से कांपने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लगा। उसके मन में वासना पैदा हुई। उन्हें पाने के लिए वह व्याकुल हो उठा। बुद्ध समझ गये कि अपनी स्त्री की ओर से नन्द का मन हट गया है। बोले, "इन अप्सराओं को देखो और अब अपनी पत्नी के रूप के बारे में अपनी सम्मति बताओ।"

नन्द ने कहा, "एक आंखवाली वह बंदरिया आपकी वधू से रूप में जितनी दूर है उतनी ही दूर आपकी वह बेचारी वधू इन सुन्दरी अप्सराओं से है। इससे पहले अपनी पत्नी को छोड़कर मेरा मन किसी और स्त्री की ओर नहीं गया। वैसे ही आज इन अप्सराओं को देखकर मुझे अपनी पत्नी की कोई चाह नहीं रही। मैं राग की आग में जल रहा हूं। मुझे अपनी वाणी के जल से शान्त कीजिये। मेरी रक्षा कीजिये। हे मुनि, काम-रूपी सर्प मुझे डसे जा रहे हैं। हे महाभिषग, मेरा उद्धार कीजिये।"

तब उपयुक्त समय जानकर महर्षियों में श्रेष्ठ गौतम ने कहा, "हे सौम्य, धैर्य धारण करके विकार को दूर करना होगा। यदि तुम इन अप्सराओं को चाहते हो तो तप करके इनकी प्राप्ति का मूल्य चुकाओ। इन्हें पाने के लिए प्रमाद-रहित होकर नियम का पालन करो। व्रत पूरा होने पर अवश्य तुम इन्हें पाओगे।"

'अच्छा' कहकर नन्द ने बुद्ध की बात पर भरोसा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किया और तब मुनि उसे लेकर पृथ्वी पर लौट आये। उन अप्सराओं को देखकर नन्द ने अपने चंचल चित्त को नियम-रूपी खम्भे में बांधा। वैराग्य उसे अच्छा नहीं लगता था, लेकिन उनको पाने की इच्छा से उसने अपना मन धर्म में लगाया। उसने ब्रह्मचर्य का पालन शुरू किया। वह स्वभाव से ही सुन्दर था, पर अप्सराओं की चिन्ता और शारीरिक संयम ने उसका रूप बदल डाला। वह अपनी पत्नी को चाहता था, पर अब उसकी चर्चा चलने पर उसे न हर्ष होता, न दुःख। यह देखकर आनन्द ने कहा, "नन्द, मालूम होता है इन्द्रियों पर संयम करने से तुम्हारा मन स्वस्थ हुआ है। तुम सचमुच बड़े धैर्यवान हो। कामी के लिए ब्रह्मचर्य बड़ा कठिन है। नियम-पालन में जो तुम्हारी निष्ठा है उसमें मुझे एक सन्देह है। यदि तुम आज्ञा दो तो कहूं। क्या तुम अप्सराओं को पाने के लिए धर्म का आचरण कर रहे हो? यदि यह बात सच है तो मैं इसका उपाय बताऊंगा।"

आनन्द के ऐसे वचन सुनकर नन्द ने लम्बी सांस ली और मुंह नीचा कर लिया। उसके मन के भाव जानकर आनन्द ने कहा, "तुम्हें देखकर मैंने सबकुछ जान लिया था। मुझे तुमपर हँसी और दया आती है। काम का उपभोग करने के लिए तुम ब्रह्मचर्य रख रहे हो,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लेकिन इससे तुम्हें शान्ति नहीं मिलेगी। तुम्हारा मन जल रहा है। केवल शरीर से व्रत का बोझा ढो रहे हो। ऐसा ब्रह्मचर्य कबतक चलेगा? इस संसार में रहते हुए क्या सैकड़ों बार तुमने अप्सराओं को पाया और खोया नहीं है? फिर क्यों तुम्हें उनकी अभिलाषा होती है? यदि तुम आनन्द चाहते हो तो मन को अध्यात्म में लगाओ। जबतक तृष्णा है तबतक दुःख है। विषयों की तृष्णा रखनेवाले को कभी शान्ति नहीं मिलती। मनुष्य कठोर कर्म करके स्वर्ग पाता है, पर फिर स्वर्ग से धरती पर लौट आता है। शिवि, मान्धाता नहुष, ययाति आदि राजाओं के साथ ऐसा ही हुआ, लेकिन एक बार स्वर्ग में रहकर वहां से लौट आने पर दुःख और भी बढ़ जाता है। इसलिए स्वर्ग अच्छा नहीं है। उसे नाशवान जानकर मोक्ष में अपना मन लगाओ। जन्म, मरण शोक, भय से रहित जो पद है और जो कल्याणकारी अमृत है, उसके लिए ब्रह्मचर्य का आचरण करो। चलायमान स्वर्ग की इच्छाओं को छोड़ो।"

: ६ :

"अप्सराओं को पाने के लिए धर्म कर रहे हो।" आनन्द की यह बात नन्द को चुभ गई। वह बहुत लज्जित हुआ। पहले उसने स्वर्ग के भोगों को अटल समझ लिया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

था, पर अब आनन्द से उसकी अनित्यता के बारे में सुनकर उसे वैराग्य हो गया। बड़ों-बड़ों को भी यहां फिर लौटना पड़ा है—इस डर से उसका मन वीतराग जैसा हो गया। वह बुद्ध के पास पहुंचा और आंखों में आंसू भर-कर बोला, "भगवन्, मुझे अब अप्सराओं से कोई काम नहीं है। क्षणभंगुर स्वर्ग को मैं प्रणाम करता हूं। वहां से भी अतृप्त होकर लोग पृथ्वी पर लौटते हैं, इस-लिए मैं सब दुखों का अन्त करनेवाले आपके धर्म की शरण में आता हूं। कृपया उस धर्म को मुझे समझाइये।"

तथागत ने कहा, "अहो, तुम्हारा यह विवेक आनेवाले सौभाग्य का सूचक है। आज तुम्हारा जन्म सफल है, क्योंकि तुम्हारा कामी मन वैराग्य में लग गया है। दुःख का अत्यन्त निरोध ही सुख है। तुम धर्म की ओर चल पड़े हो। तुम्हारी यह बुद्धि जो अभी विकसित हो रही है, तुम्हारे हृदय का अंधकार दूर कर देगी। धरती से अनाज के उत्पन्न होने की श्रद्धा किसान के मन में न हो तो वह बीज नहीं बोयेगा। अपने मन की श्रद्धा से मनुष्य सब वस्तुओं को पकड़ता है। श्रद्धा ही प्रधान इन्द्रिय बल और धन है। श्रद्धा पाप को धो डालनेवाला तीर्थ है। वह धर्म की उत्पत्ति का उत्तम कारण है, इसलिए तुम श्रद्धा के अंकुर को बढ़ाओ।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बुद्ध से श्रद्धा की प्रशंसा सुनकर नन्द को ऐसा सुख मिला जैसे उसे किसीने अमृत से सींच दिया हो। बुद्ध ने कहा, "हे सौम्य, अबसे तुम श्रद्धा-रूपी साधन से सज्जित होकर शील की रक्षा करो। ऐसा करो, जिससे तुम्हारे सारे कर्म सबके लिऐ खुले हुए और निर्दोष बन जायं। कपट आदि दोषों को छोड़ दो। भिक्षु-व्रत के निश्चित नियमों का पालन करके अजीविका को शुद्ध करो। चरित्रवान बनकर ब्रह्मचर्य का पालन करो। शील के सहारे ही कल्याण की सब क्रियाएं पूरी होती हैं। हे सौम्य, मोक्ष का रहस्य वैराग्य है। वैराग्य का रहस्य आत्मा की निजी प्रेरणा है। आत्म-प्रेरणा का रहस्य ज्ञान का दर्शन है। ज्ञान का रहस्य समाधि है। समाधि का फल शरीरिक और मानसिक सुख है। उसी-से परम शान्ति मिलती है। शान्ति से ही सब प्रकार की प्रसन्नता प्राप्त होती है। यह स्थिति शील से ही मिला करती है। इसलिए शील ही प्रधान है। बार-बार के अभ्यास का नाम शील है। मोक्ष के लिए प्रयत्न करने-वाले योगियों को शील ही एकमात्र सहारा है। स्मृति को स्थिर करके तुम्हें चपल इन्द्रियों को विषय से हटाना चाहिए। इस विषय में तुम क्षण-भर भी प्रमाद न करो।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन्होंने फिर कहा, "इसके लिए सबसे पहले अपने भोजन की मात्रा जाननी चाहिए। अधिक भोजन प्राण और अपान के नियमित कार्य में बाधा पैदा करता है। उससे आलस्य और नींद बढ़ती है। जैसे अधिक भोजन से अनर्थ होता है वैसे ही बहुत कम भोजन से भी पूरी शक्ति नहीं मिल पाती। इसलिए सदा अपनी शक्ति को देखते हुए भोजन करना चाहिए। केवल भूख मिटाने के लिए भोजन करना चाहिए। योग का अभ्यास करने-वाले मनुष्य ऐसा ही करते हैं। मन को वश में करके दिन बिताओ और नींद को वश में करके रात के अधिक भाग को योगाभ्यास में लगाओ। नींद को मानसिक अन्धकार समझकर उसके वश में न होओ। रात के पहले पहर को योगाभ्यास में बिताओ। दूसरे पहर में शैय्या पर विश्राम करो। तीसरे पहर में उठ बैठो और योग में लग जाओ। सब काम करते हुए अपनी स्मृति को सदा अपने निशाने पर साधे रहो। वह द्वारपाल के समान है। जिसने स्मृति का कवच पहना है, उसे दोषों के बाण अपना निशाना नहीं बनाते। स्मृति के बिना आर्य सत्य नहीं मिलता और आर्य सत्य के बिना सत्पथ नहीं मिलता। हे सौम्य, योगी के अनुकूल एकान्त स्थान में अपनी शैया और आसन नियत करो। जो व्यक्ति पवित्र हृदय से एकान्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में विहार करता है वह प्रज्ञा-रस के अमृत का पान करके तृप्त हो जाता है।"

इसके पश्चात् भगवान बुद्ध ने नन्द को बताया कि किस प्रकार समाधि लगाकर चंचल मन को वश में करना चाहिए। उन्होंने कहा, "बुरे को छोड़कर अच्छे का ही ध्यान करना चाहिए। बुरे विचार अपने ही मन की योग्यता का नाश कर डालते हैं। इसका भी अभ्यास करो कि तुम्हारे मानसिक कर्मों में विघ्न न पड़ सके। जीव-लोक के स्वभाव पर विचार करो। संसार में सब अपने-अपने कर्म-से खिचे जा रहे हैं। कौन किसका अपना या पराया है? इसलिए स्वजनों की चिन्ता से अपने मन की शान्ति भंग न करो। संसार में कहीं भी निरापद स्थान नहीं है। जहां यह शरीर जाता है वहीं दुःख पीछा करता है। ऐसे दुःखमय संसार में अपने मन को आसक्त न बनाओ। जीवन का विश्वास नहीं। काल छिपे हुए बाघ के समान विश्वासी पर घात करता है। संसार में जन्म लेकर कोई भी मनुष्य न तो मृत्यु को जीत सका है और न जीत सकेगा। जैसे रोग को दूर करने के लिए औषधि का सेवन किया जाता है वैसे ही बुरे विचारों के नाश के लिए अच्छे भावों का चिन्तन करना चाहिए।"

फिर उत्तम वक्ता बुद्ध नन्द की बढ़ती हुई एका-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रता को जानकर उसके सामने आर्यसत्यों की व्याख्या करने लगे। किस प्रकार योगी बराबर मानसिक एकाग्रता को प्राप्त करता हुआ ध्यान की शक्ति को बढ़ाता है और चार आर्यसत्यों का ज्ञान प्राप्त करता है, यह बताते हुए उन्होंने कहा, "दुःख है, दुःख का कारण है, दुःख का क्षय है और उस अवस्था को प्राप्त करने के लिए एक शान्ति का मार्ग है। बुढ़ापा आदि विपत्तियों का मूल जन्म-रूपी दुःख है। जन्म ही मृत्यु और रोग का कारण है। जन्मरूपी दुःख का कारण तृष्णा आदि दोष हैं। दोषों से ही संसार की उत्पत्ति होती है। वैराग्य से दोषों का जन्म नहीं होता। यदि दुःख से छुटकारा चाहो तो दोषों को काटो। अमृत पद की खोज करो। जैसे बुझे हुए दीप का प्रकाश न धरती पर पड़ता है, न आकाश में, न किसी दिशा में, न विदिशा में—बस तेल समाप्त होने पर वह केवल बुझ जाता है—ऐसे ही निर्वाण को प्राप्त हुआ पवित्र पुरुष सब क्लेशों का नाश होने पर शान्त हो जाता है। इसकी प्राप्ति का उपाय वह मार्ग है, जिसके आठ अंग हैं। वाणी और शरीर का सम्यक् कर्म, शुद्ध आजीविका, इन तीनों का सम्बन्ध आचार से है। शील इनका आश्रय है। इनसे कर्मों का निग्रह होता है। सम्यक् दृष्टि, सम्यक् विचार और सम्यक् यत्न, इन तीनों का सम्बन्ध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्ञान से है। प्रज्ञा इनका आश्रय है। इनसे क्लेशों का क्षय होता है। सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि इन दो का सम्बन्ध योग से है। इनका आश्रय शान्ति है। इनसे चित्त का निग्रह होता है। शील दोषों को अंकुरित नहीं होने देता। समाधि उन्हें रोकती है और प्रज्ञा दोषों को उखाड़ फेंकती है। इसलिए शील, समाधि और प्रज्ञावाले इस आर्य अष्टांगिक मार्ग पर मनुष्य को आरूढ़ होना चाहिए। जब चित्त उत्तेजित हो, उसे शान्त करो। जब आलस्य में डूब रहा हो, उसे प्रेरणा दो। जब द्वेष से क्षुब्ध हो तो मैत्री का सेवन करो। जब राग या काम-भय से उत्तेजित हो तब धैर्य-पूर्वक अशुभ परिणामों पर विचार करो। मनुष्य का यह बड़ा पुरुषार्थ है कि वह अशुभ विचारों को समूल नष्ट कर दे। वन में जाकर मनुष्य स्वस्थ चित्त हुआ तो क्या! दोषों से हृदय में पीड़ित होता हुआ जो क्षुब्ध नहीं होता, वही धीर है।"

: ७ :

जब नन्द ने इस प्रकार तथागत का उपदेश सुना तो उसे मोक्ष-मार्ग का ज्ञान हो गया। शास्ता को प्रणाम करके वह जंगल की ओर चला गया। एक नदी के किनारे वृक्षों के नीचे मोक्ष-प्राप्ति का निश्चय करके वह पद्म-आसन में बैठ गया। वह पवित्र मन से योग में लग गया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसने आसक्ति से अपनेको मुक्त कर लिया और उद्योग का सहारा लेकर शक्ति का संग्रह किया। इसी कारण से वह शांत और स्वस्थ होकर विषयों से विरक्त हो गया। यद्यपि उसकी बुद्धि प्रखर थी और निश्चय दृढ़ था तो भी काम-वासना ने उसके मन को व्याकुल कर दिया, लेकिन उसने तुरन्त मन की इस विपरीत दशा को पहचान लिया और काम-भावना को दूर हटा दिया। इतने पर भी बुरे विचारों ने उसके मन पर फिर आक्रमण किया। तब उनको नष्ट करने के लिए उसने योग के अनुकूल अच्छे विचारों का सहारा लिया। जिस प्रकार एक राजा अपने नगर का दुर्ग-विधान करके उसकी रक्षा करता है, उसी प्रकार उसने अपने मन की रक्षा की। वह मोक्ष का पात्र बन चुका था। इसलिए उसने आत्म-केंद्र में अपने मन का संचय कर लिया। उसने संसार को दुःखमय और शून्य समझ लिया। उसने दृढ़तापूर्वक क्लेशों की सेना में प्रवेश किया और अनेक आध्यात्मिक साधनों से धर्म की भूमियों को क्रमशः प्राप्त किया। योग द्वारा काम, राग और प्रतिहिंसा को शान्त किया। राग नामक महान् शत्रु को विदीर्ण कर डाला। फिर द्रोह, लोभ, मोह आदि शत्रुओं को परास्त किया। कामाग्नि की दाह से मुक्त हो जाने पर उसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ध्यान का परमानन्द इस प्रकार मिलने लगा जिस प्रकार गर्मी से तपते हुए मनुष्य को जल में प्रवेश करने पर सुख होता है। क्रम-क्रम से उच्चतर ध्यान की भूमिकाओं को प्राप्त करते हुए उसने अर्हत-पद प्राप्त करने का निश्चय किया और प्रज्ञा-रूपी तलवार से कल्याण के बाधक दस बन्धनों को काट डाला। तब वह विलक्षण-सा दिखाई देने लगा और उसने मन-ही-मन शास्ता को प्रणाम किया—राग-रूपी कांटे के निकल जाने से जब आज मैं ऐसे महान् सुख का अनुभव कर रहा हूं तब निर्वाण का तो न जाने कितना सुख होगा? जिस विनायक की कृपा से मुझे यह शान्ति मिली है उन तथागत को, उन महाभिषग् को, मैं बार-बार प्रणाम करता हूं।

इस प्रकार आनन्द से कृतार्थ होकर नन्द भगवान् बुद्ध के समीप गया। उसका मन उमंग से भरा हुआ था, उसने मस्तक झुकाकर गुरु को प्रणाम किया और निवेदिन किया, "हे प्रभो, मेरे हृदय में मिथ्या दृष्टि-रूपी जो तेज कांटा गड़ा हुआ था उसे आपने उपदेश-रूपी संडासी से बाहर खींच लिया। मेरा संशय नष्ट हो गया। मैं सन्मार्ग पर आ गया। भव-चक्र से मुक्त हो गया। यद्यपि लोक में हूं तो भी लोक-धर्म में फंसा हुआ नहीं हूं। धातुओं में मेरी आसक्ति नहीं रही। शरीर और शरीर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के बाहरी पदार्थों को मैं समान जानता हूं। मुझमें अहम्-भाव नहीं रहा। देखने, सुनने आदि व्यवहार-धर्मों में मेरा चित्त समभाव को प्राप्त हो गया है। इसलिए मैं मुक्त हो गया हूं।" यह कहकर उसने बड़े आदर से एक बार फिर गुरु को दण्डवत् प्रणाम किया। उसके धर्माचरण और शुद्धाचरण को देखकर मुनि बोले, "हे धर्म का आचरण करनेवाले, उठो। मुझे प्रणाम करना वैसा सम्मान नहीं है, जैसा इस धर्म का आचरण करना। तुम्हारा प्रव्रजित होना सफल हुआ। जिसने आत्मा को जीत लिया है उसका संन्यास सफल है। तुम्हारे मन, वचन और शरीर आदि शुद्ध हैं। विषयों से विरक्त होकर मोक्ष-प्राप्ति के उपाय में तुमने जो अपना मन लगाया है सो तुम्हारा शास्त्र-ज्ञान सार्थक है। मानवीय जीवन दुर्लभ है। मोह के वश में होकर तुमने उसे व्यर्थ नहीं गंवाया। मार को जीतकर आज तुम अग्रगामी वीर बन गये हो। इच्छा,तृष्णा का नाश हो जाने से तुम सचमुच समृद्धिशाली बन गये हो। आज तुम सच्चे गर्व से यह कह सकते हो कि राजा शुद्धोदन तुम्हारे पिता हैं, क्योंकि तुमने उस कुल के अनुरूप ही धर्म का पालन किया है। तुमने परम शान्ति प्राप्त कर ली है।"

तथागत के ये वचन सुनकर नन्द ने हाथ जोड़कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तर दिया, "हे भगवन्, यह सब आपकी ही कृपा है। मैं तो काम-पंक में डूबा हुआ था। आपने मुझे बचा लिया। माता, पिता, भ्राता, शास्ता, मेरे तो सबकुछ आप ही हैं। आप मुझे न बचाते तो मैं नष्ट हो गया होता। अब मुझे न सुन्दरी की इच्छा है, न अप्सराओं की। प्राणियों के प्रति तथागत का मन अत्यन्त मैत्रीपूर्ण है। ऐसे हितैषी और कारुणिक गुरुदेव का मैं क्या उपकार कर सकता हूं ?"

बुद्ध बोले, "हे प्रज्ञावान्, ऐसी कृतज्ञता तुम्हारे ही अनुकूल है। अब जो मैं कहता हूं उसे ध्यानपूर्वक सुनो। हे सौम्य, तुम अपने लिए परम गति प्राप्त कर चुके हो। अब घोर अन्धकार में भटकते हुए दूसरे जीवों के लिए इस ज्ञान-दीप को प्रज्वलित करो। तुम विषयों की इच्छाओं से मुक्त हो चुके हो, यह सुनकर घर में तुम्हारी पत्नी भी तुम्हारे ही मार्ग पर चलेगी और स्त्रियों के बीच वैराग्य की कथा कहेगी।"

इस प्रकार परम कारुणिक पूज्य शास्ता के वचन शिरोधार्य कर नन्द मद-युक्त हाथी के समान वहां से चला गया। समय पर उसने भिक्षा के लिए नगर में प्रवेश किया। पुरवासियों की दृष्टि बरबस उसकी ओर खिंच जाती थी। वह हानि-लाभ, सुख-दुःख में समान और इच्छा-रहित था। जिन लोगों ने चाहा, उनके लिए उसने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मोक्ष की कथा कही, लेकिन जो उल्टे मार्ग पर चलने-वाले थे उनकी उसने निन्दा नहीं की और न अपनी श्रेष्ठता ही प्रकट की।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'संस्कृत साहित्य सौरभ' की पुस्तकें

१. कादम्बरी
२. उत्तररामचरित
३. वेणी-संहार
४. शकुन्तला
५. मृच्छकटिक
६. मुद्राराक्षस
७. नलोदय
८. रघुवंश
९. नागानन्द
१०. मालविकाग्निमित्र
११. स्वप्नवासवदत्ता
१२. हर्ष-चरित
१३. किरातार्जुनीय
१४. दशकुमार-चरित : भाग १
१५. दशकुमार-चरित : भाग २
१६. मेघदूत
१७. विक्रमोर्वशी
१८. मालतीमाधव
१९. शिशुपाल-वध
२०. बुद्ध-चरित
२१. कुमारसंभव
२२. महावीर-चरित
२३. रत्नावली
२४. पंचरात्र
२५. प्रियदर्शिका
२६. वासवदत्ता
२७. रावण-वध
२८. सौंदरनंद
२९. कुंदमाला
३०. यशस्तिलक
३१. तिलक-मंजरी
३२. प्रतिमा-नाटक
३३. तीन नाटक
३४. नै
३५. चम्पू भारत

मूल्य प्रत्येक का ४० नये पैसे

अमल साहित्य मण्डल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu